-फणीश्वरनाथ रेणु

# लाल पान की बेगम

PRESENTATION

Department of Hindi
**Pandaveswar college**

फणीश्वरनाथ रेणु

**जन्म :** 4 मार्च, 1921 ।

**जन्म-स्थान :** औराही हिंगना, ज़िला पूर्णिया, बिहार ।

राजनीति में सक्रिय भागीदारी। 1942 के भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में एक प्रमुख सेनानी की भूमिका निभायी। 1950 में नेपाली जनता को राणाशाही के दमन और अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए वहाँ की सशस्त्र क्रान्ति और राजनीति में जीवन्त योगदान। 1952-53 में दीर्घकालीन रोगग्रस्तता के बाद साहित्य की ओर अधिक झुकाव।

1954 में पहला उपन्यास *मैला आँचल* प्रकाशित और बहुचर्चित। कथा-साहित्य के अतिरिक्त संस्मरण, रेखाचित्र और रिपोर्ताज आदि विधाओं में भी लिखा। जीवन के सन्ध्याकाल में राजनीतिक आन्दोलन से पुनः लगाव। पुलिस दमन का शिकार हुए और जेल गये। सत्ता के दमन चक्र के विरोध में पद्मश्री की उपाधि का त्याग। 11 अप्रैल, 1977 को देहावसान।

**प्रमुख कृतियाँ :** *मैला आँचल, परती परिकथा, कलंक-मुक्ति, जुलूस, कितने चौराहे, पल्टू बाबू रोड* (उपन्यास)। *ठुमरी, अगिनखोर, आदिम रात्रि की महक, एक श्रावणी दोपहरी की धूप, अच्छे आदमी* (कहानी-संग्रह)। *ऋणजल-धनजल, वन तुलसी की गन्ध, श्रुत-अश्रुत पूर्व* (संस्मरण)। *नेपाली क्रान्ति कथा* (रिपोर्ताज)।

# कहानी से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्य:

- 'लालपान की बेगम' 1957 में भावात्मक शैली में लिखी गई एक आँचलिक कहानी है।

- ठुमरी संग्रह में संकलित लालपान की बेगम 1956 की कहानी है। यह इलाहाबाद से प्रकाशित 'कहानी' पत्रिका के जनवरी 1957 के अंक में प्रकाशित हुई थी।

- पुंज प्रकाश ने इस कहानी का नाट्य रूपान्तरण भी किया है, जिसे सन् 1907 में शारदा सिंह के निर्देशन में पटना के कालिदास रंगालय में मंचित किया गया।

- लाल पान की बेगम नारी केन्द्रित कहानी है। यह कहानी नारी सशक्तिकरण को केंद्र में रखकर लिखा गया है।

- गाँव में महिलाओं के बीच होने वाले माहौल का जीवंत वर्णन कहानी में किया गया है।

पति-पत्नी के बीच रिश्तों के खट्टी-मीठी, नोंक झोंक, और मनाना-रूठना आदि का वर्णन है।

- कहानी में ग्रामीण जीवन में होने वाले मेलों और नाच को दिखाया गया है।

रेणु जी ने इस कहानी में नारी के स्वाभिमान और आत्मसम्मान को जग जाहिर किया है।

# कहानी के पात्र

**बिरजू-** चंपिया का भाई

**बिरजू की माँ-** मुख्य नायिका और एक सशक्त महिला जो सबको एक साथ लेकर चलने

में विश्वास रखती है।

**बिरजू के पिता-** डरपोक किस्म का आदमी है जो अपनी चाह को हमेशा दबाकर रखता है।

**चंपिया-** बिरजू की बहन

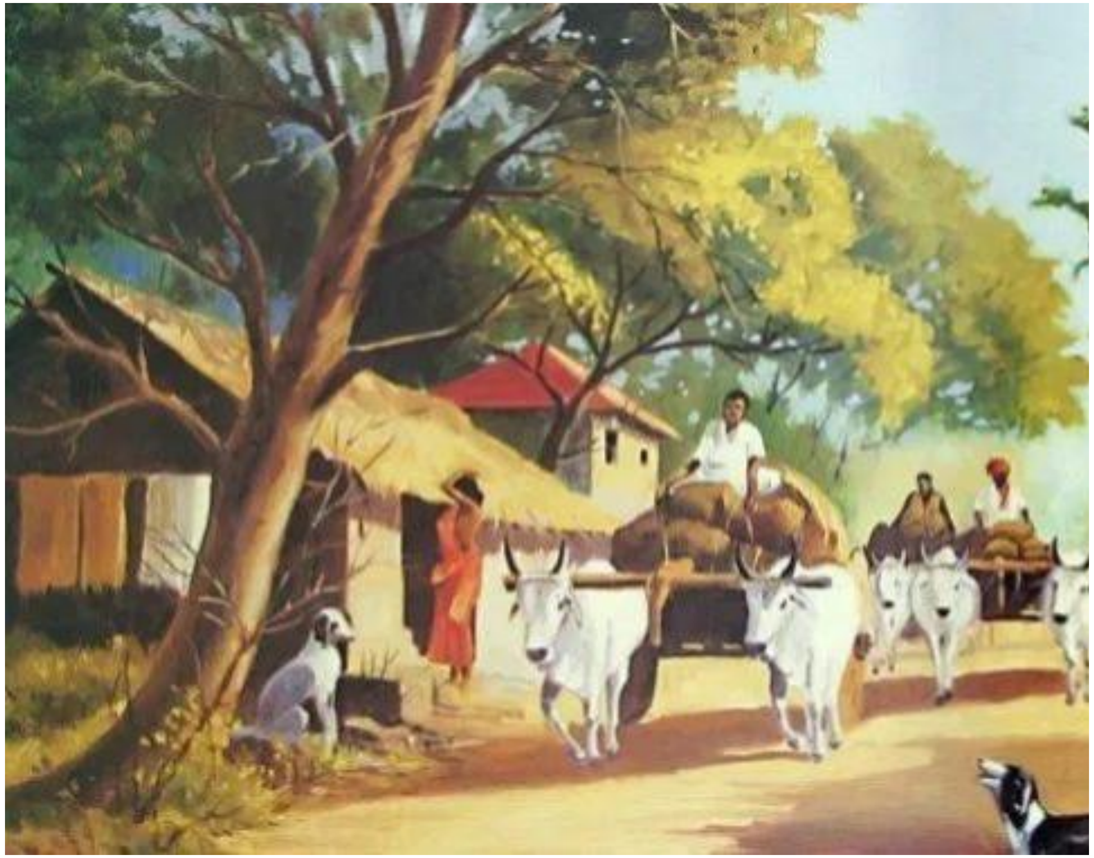

**मखनी/भवानी फुआ पड़ोसी-** जिसका कोई भी नहीं है।

**जंगी की पतोहू-** एक मुँहजोर नवविवाहिता स्त्री जो बिरजू की माँ से नहीं डरती है।

**ग्रामीण-** लारेना की बीबी, राधे की बेटी, सुनरी, सहूआईन

# कहानी का उद्देश्य

फ़णीश्वर नाथ रेणु द्वारा लिखी गई कहानी 'लाल पान की बेगम' का मकसद स्त्री सशक्तिकरण को दिखाना है।
इस कहानी के ज़रिए लेखक यह बताना चाहते हैं कि महिलाएं भी अपने जीवन को अपनी मर्ज़ी से जीना चाहती हैं और उनका भी आत्मसम्मान होना चाहिए।
कहानी में बिरजू की मां एक आधुनिक और प्रगतिशील विचारों वाली महिला है।वह एक सशक्त महिला है जो अपने आत्मसम्मान और स्वाभिमान को महत्व देती है।

# धन्यवाद